



ढैंचा की खेती

डॉ.अमित कु. केशरी एवं डॉ. आशीष कु. श्रीवास्तव

वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कौशाम्बी



परिचय

ढैंचा एक अत्यंत उपयोगी हरी खाद वाली दलहनी फसल है। इसका वैज्ञानिक नाम "*Sesbania aculeate*" है। भारत में इसे मुख्य रूप से खेतों की उर्वरता बढ़ाने और मिट्टी में जैविक पदार्थ की मात्रा सुधारने के लिए उगाया जाता है। ढैंचा की फसल कम समय में अधिक हरा पदार्थ पैदा करती है, इसलिए इसे धान की खेती से पहले खेत में पलटकर हरी खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है।

ढैंचा की जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाए जाते हैं जो वायुमंडल की नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर कर देते हैं। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और अगली फसल को पर्याप्त पोषण मिलता है। यह फसल विशेष रूप से उन किसानों के लिए लाभदायक है जो कम लागत में मिट्टी की गुणवत्ता सुधारना चाहते हैं।



ढैंचा का महत्व

ढैंचा की खेती केवल हरी खाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह टिकाऊ कृषि (Sustainable Agriculture) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। लगातार रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की संरचना खराब हो जाती है, जबकि ढैंचा मिट्टी को पुनः जीवंत बनाने में सहायता करता है। इसके प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:

- मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है।
- भूमि की जैविक कार्बन सामग्री में वृद्धि होती है।

- मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ती है।
- भूमि मुलायम और भुरभुरी बनती है।
- खरपतवार नियंत्रण में सहायता मिलती है।
- रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम होती है।
- अगली फसल की पैदावार बढ़ती है।
- धान, गन्ना, गेहूँ और सब्जियों की खेती से पहले ढैंचा का प्रयोग विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है।

जलवायु

ढैंचा गर्म और आर्द्र जलवायु की फसल है। इसकी वृद्धि के लिए 25 से 35 सेल्सियस तापमान सबसे उपयुक्त होता है।

- अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में इसकी अच्छी वृद्धि होती है।
- जलभराव की स्थिति को भी यह कुछ हद तक सहन कर लेती है।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई की व्यवस्था आवश्यक होती है।
- भारत में इसे मुख्य रूप से खरीफ मौसम में उगाया जाता है।

उपयुक्त मिट्टी

ढैंचा लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है लेकिन अच्छी पैदावार के लिए दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। यह फसल निम्न प्रकार की मिट्टियों में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है:

- हल्की रेतीली मिट्टी
- भारी चिकनी मिट्टी
- क्षारीय मिट्टी
- हल्की लवणीय भूमि
- मिट्टी का चम् मान 6.5 से 8.5 तक उपयुक्त माना जाता है।

खेत की तैयारी

सबसे पहले खेत की एक गहरी जुताई पलटने वाले हल से करने के बाद 2-3 हल्की जुताइयाँ कर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए। खेत समतल होना

चाहिए ताकि खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था हो सके। समतल खेत में बीज अंकुरण अच्छा होता है और पौधों की वृद्धि समान रूप से होती है।

बुवाई का समय

ढेंचा की बुवाई सामान्यतः मानसून शुरू होने पर की जाती है। समय पर बुवाई करने से अधिक हरी खाद प्राप्त होती है। भारत में ढेंचा की कई उन्नत किस्में उगाई जाती हैं। इन किस्मों में तेजी से वृद्धि होती है तथा अधिक हरा पदार्थ प्राप्त होता है। इन किस्मों में तेजी से वृद्धि होती है तथा अधिक हरा पदार्थ प्राप्त होता है।

क्षेत्र	बुवाई का समय
उत्तरी भारत	जून-जुलाई
दक्षिण भारत	मई-जून
सिंचित क्षेत्र	फरवरी-मार्च भी संभव

बीज की मात्रा

अच्छे अंकुरण के लिए स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करना चाहिए। ढेंचा की खेती में बीज की मात्रा बुवाई विधि पर निर्भर करती है,

- छिटकवाँ विधि 30-35 किग्रा/हेक्टेयर
- कतार विधि 20-25 किग्रा/हेक्टेयर

बीज उपचार

बीज बोने से पहले राइजोबियम कल्चर से उपचार करना लाभकारी होता है। इससे नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता बढ़ जाती है। बीज उपचार करने से अंकुरण अच्छा होता है, पौधों की वृद्धि तेज होती है एवं नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ती है।

बुवाई की विधि

ढेंचा की बुवाई दो तरीकों से की जाती है:

1. **छिटकवाँ विधि**— इस विधि में बीज पूरे खेत में समान रूप से बिखेर दिए जाते हैं। यह तरीका सरल और कम खर्चीला है।
2. **कतार विधि**— इसमें बीज कतारों में बोए जाते हैं। कतार विधि से निराई-गुड़ाई में सुविधा होती है। कतार से कतार की दूरी 25-30 सेमी, पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेमी एवं बीज गहराई 2-3 सेमी होनी चाहिये।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

ढेंचा एक दलहनी फसल होने के कारण स्वयं नाइट्रोजन तैयार करती है। इसलिए सामान्यतः

नाइट्रोजन उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती। हालाँकि प्रारंभिक वृद्धि के लिए 20-30 किग्रा फास्फोरस प्रति हेक्टेयर दिया जा सकता है। गोबर की सड़ी खाद का प्रयोग लाभकारी होता है।

सिंचाई प्रबंधन

यदि वर्षा पर्याप्त हो तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। सूखे की स्थिति में 1-2 सिंचाइयाँ लाभकारी होती हैं।

खरपतवार नियंत्रण

ढेंचा तेजी से बढ़ने वाली फसल है, इसलिए खरपतवार कम उगते हैं। फिर भी प्रारंभिक अवस्था में निराई आवश्यक होती है। पहली निराई 20-25 दिन बाद एवं आवश्यकता पड़ने पर दूसरी निराई करें।

हरी खाद के रूप में उपयोग

ढेंचा को बुवाई के लगभग 45-50 दिन बाद, फूल आने से पहले खेत में पलट देना चाहिए। इस समय पौधों में नाइट्रोजन अधिक होती है, तने मुलायम होते हैं और जल्दी सड़न होती है। फसल पलटने के बाद खेत में हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए ताकि पौधे जल्दी गलकर मिट्टी में मिल जाएँ।



ढेंचा से प्राप्त लाभ

1. **नाइट्रोजन की पूति** — ढेंचा लगभग 40-60 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर मिट्टी में जोड़ सकता है।
2. **मिट्टी की संरचना में सुधार** — मिट्टी मुलायम और भुरभुरी बनती है।
3. **उत्पादन में वृद्धि** — धान एवं अन्य फसलों की उपज 10-20% तक बढ़ सकती है।
4. **लागत में कमी** — रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता घटती है।
5. **पर्यावरण संरक्षण** — जैविक खेती को बढ़ावा मिलता है तथा मिट्टी प्रदूषण कम होता है।

ढैंचा और धान की खेती

धान की रोपाई से पहले ढैंचा उगाकर खेत में पलटना सबसे अधिक लाभकारी माना जाता है। इससे धान की शुरुआती वृद्धि अच्छी होती है, रासायनिक यूरिया की आवश्यकता कम और मिट्टी में नमी बनी रहती है।

निष्कर्ष

ढैंचा की खेती मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने और टिकाऊ कृषि प्रणाली करने का एक प्रभावी उपाय है। कम लागत, कम देखभाल और अधिक जैविक लाभ के कारण यह फसल किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। विशेष रूप से धान आधारित खेती में ढैंचा का उपयोग भूमि की उत्पादकता बनाए रखने के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प है।

***Corresponding E-mail:
amit_keshri087@yahoo.in**